

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ

Surah 23 — Al-Muminoon (The Believers) · Meccan · 118 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ

अलबत्ता वह ईमान लाने वाले रस्तगार हुए

2

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خُشْعُونَ

जो अपनी नमाज़ों में (खुदा के सामने) गिड़गिड़ाते हैं

3

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ

और जो बेहूदा बातों से मुँह फेरे रहते हैं

4

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ

और जो ज़कात (अदा) किया करते हैं

5

وَالَّذِينَ هُمْ لِأُزُوجِهِمْ حَافِظُونَ

और जो (अपनी) शर्मगाहों को (हराम से) बचाते हैं

6

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ

मगर अपनी बीबियों से या अपनी ज़र खरीद लौनडियों से कि उन पर हरगिज़ इल्ज़ाम नहीं हो सकता

7

فَمَنْ أَبْغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ

पस जो शख्स उसके सिवा किसी और तरीके से शहवत परस्ती की तमन्ना करे तो ऐसे ही लोग हद से बढ़ जाने वाले हैं

8

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ

और जो अपनी अमानतों और अपने एहद का लिहाज़ रखते हैं

9

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ

और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं

10

أَوْ لَكَ هُمْ الْوَرِثُونَ

(आदमी की औलाद में) यही लोग सच्चे वारिस हैं

11

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

जो बेहश्त बरी का हिस्सा लेंगे (और) यही लोग इसमें हमेशा (जिन्दा) रहेंगे

12

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ طِينٍ ۚ

और हमने आदमी को गीली मिट्टी के जौहर से पैदा किया

13

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً ۚ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۚ

फिर हमने उसको एक महफूज़ जगह (औरत के रहम में) नुत्फ़ा बना कर रखा

14

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً ۚ فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً ۚ فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا ۚ فَكَسَوْنَا

الْعِظْمَ لَحْمًا ۚ ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا ءَاخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ

फिर हम ही ने नुतफ़े को जमा हुआ खून बनाया फिर हम ही ने मुनजमिद खून को गोश्त का लोथड़ा बनाया हम ही ने लोथड़े की हड्डियाँ बनायीं फिर हम ही ने हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया फिर हम ही ने उसको (रुह डालकर) एक दूसरी सूरत में पैदा किया तो (सुबहान अल्लाह) खुदा बा बरकत है जो सब बनाने वालो से बेहतर है

15

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ

फिर इसके बाद यकीनन तुम सब लोगों को (एक न एक दिन) मरना है

16

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ تُبْعَثُونَ

इसके बाद कयामत के दिन तुम सब के सब कब्रों से उठाए जाओगे

17

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَفْلِينَ

और हम ही ने तुम्हारे ऊपर तह ब तह आसमान बनाए और हम मखलूक़ात से बेखबर नहीं है

18

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ بِقَدَرٍ ۚ فَأَسْكَنَّهُ فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهٍ ۚ لَقَدْرُونَ

और हमने आसमान से एक अन्दाज़े के साथ पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन में (हसब मसलेहत) ठहराए रखा और हम तो यकीनन उसके ग़ाएब कर देने पर भी काबू रखते हैं

19

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ ۚ جَنَّاتٍ ۚ مِّنْ نَّخِيلٍ ۚ وَأَعْنَابٍ ۚ لَّكُمْ فِيهَا فَوْكِهُ كَثِيرَةٌ ۚ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ

फिर हमने उस पानी से तुम्हारे वास्ते खजूरों और अंगूरों के बाग़ात बनाए कि उनमें तुम्हारे वास्ते (तरह तरह के) बहुतेरे मेवे (पैदा होते) हैं उनमें से बाज़ को तुम खाते हो

20

وَشَجَرَةً ۚ تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ ۚ لِلْءَاكِلِينَ

और (हम ही ने ज़ैतून का) दरख्त (पैदा किया) जो तूरे सैना (पहाड़) में (कसरत से) पैदा होता है जिससे तेल भी निकलता है और खाने वालों के लिए सालन भी है

21

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنفَعٌ كَثِيرَةٌ ۖ
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ

और उसमें भी शक नहीं कि तुम्हारे वास्ते चौपायों में भी इबरत की जगह है और (खाक बला) जो कुछ उनके पेट में है उससे हम तुमको दूध पिलाते हैं और जानवरों में तो तुम्हारे और भी बहुत से फायदे हैं और उन्हीं में से बाज़ तुम खाते हो

22

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ

और उन्हें जानवरों और कशितियों पर चढ़े चढ़े फिरते भी हो

23

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ۖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا ۖ اللَّهُ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ
أَفَلَا تَتَّقُونَ

और हमने नूह को उनकी कौम के पास पैग़म्बर बनाकर भेजा तो नूह ने (उनसे) कहा ऐ मेरी कौम खुदा ही की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तो क्या तुम (उससे) डरते नहीं हो

24

فَقَالَ الْمَلَأُ ۖ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مِنْ قَوْمِهِ ۖ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ ۖ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ
عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً ۖ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ

तो उनकी कौम के सरदारों ने जो काफिर थे कहा कि ये भी तो बस (आखिर) तुम्हारे ही सा आदमी है (मगर) इसकी तमन्ना ये है कि तुम पर बुर्जुगी हासिल करे और अगर खुदा (पैग़म्बर ही न भेजना) चाहता तो फरिश्तों को नाज़िल करता हम ने तो (भाई) ऐसी बात अपने अगले बाप दादाओं में (भी होती) नहीं सुनी

25

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ ۖ بِهِ ۖ جِنَّةٌ ۖ فَتَرَبَّصُوا ۖ بِهِ ۖ حَتَّىٰ حِينٍ ۖ

हो न हों बस ये एक आदमी है जिसे जुनून हो गया है शरज़ तुम लोग एक (खास) वक्त तक (इसके अन्जाम का) इन्तेज़ार देखो

26

قَالَ رَبِّ أَنْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونَ

नूह ने (ये बातें सुनकर) दुआ की ऐ मेरे पलने वाले मेरी मदद कर

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحَيْنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ
فَأَسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ ۖ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا
تُخْطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ ۖ إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ

इस वजह से कि उन लोगों ने मुझे झुठला दिया तो हमने नूह के पास 'वही' भेजी कि तुम हमारे सामने हमारे हुक्म के मुताबिक कश्ती बनाना शुरू करो फिर जब कल हमारा अज़ाब आ जाए और तन्नूर (से पानी) उबलने लगे तो तुम उसमें हर किस्म (के जानवरों में) से (नर मादा) दो दो का जोड़ा और अपने लड़के बालों को बिठा लो मगर उन में से जिसकी निस्बत (गरक होने का) पहले से हमारा हुक्म हो चुका है (उन्हें छोड़ दो) और जिन लोगों ने (हमारे हुक्म से) सरकशी की है उनके बारे में मुझसे कुछ कहना (सुनना) नहीं क्योंकि ये लोग यकीनन डूबने वाले हैं

فَإِذَا أَسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلْكَ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَا مِنَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ

गरज जब तुम अपने हमराहियों के साथ कश्ती पर दुरुस्त बैठो तो कहो तमाम हम्दो सना की सज़ावार खुदा ही है जिसने हमको ज़ालिम लोगों से नजात दी

وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا ۖ مُبَارَكًا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ

और दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले तू मुझको (दरख्त के पानी की) बा बरकत जगह में उतारना और तू तो सब उतारने वालो से बेहतर है

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۖ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ

इसमें शक नहीं कि हसमें (हमारी कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं और हमको तो बस उनका इम्तिहान लेना मंज़ूर था

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ ۖ بَعْدِهِمْ قَرْنًا ۖ آخَرِينَ

फिर हमने उनके बाद एक और क़ौम को (समूद) को पैदा किया

32

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا ۖ مِنْهُمْ أَنْ أَعْبُدُوا ۚ اللَّهُ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۚ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ

और हमने उनही में से (एक आदमी सालेह को) रसूल बनाकर उन लोगों में भेजा (और उन्होंने अपनी क़ौम से कहा) कि खुदा की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तो क्या तुम (उससे डरते नहीं हो)

33

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِلِقَاءِ آلِ آخِرَةٍ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ ۚ مِثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ

और उनकी क़ौम के चन्द सरदारों ने जो काफिर थे और (रोज़) आखिरत की हाज़िरी को भी झुठलाते थे और दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी में हमने उन्हें शहवत भी दे रखी थी आपस में कहने लगे (अरे) ये तो बस तुम्हारा ही सा आदमी है जो चीज़े तुम खाते वही ये भी खाता है और जो चीज़े तुम पीते हो उन्हीं में से ये भी पीता है

34

وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا ۚ مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخُسِرُونَ

और अगर कहीं तुम लोगों ने अपने ही से आदमी की इताअत कर ली तो तुम ज़रूर घाटे में रहोगे

35

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا ۚ ۚ وَعِظْمًا أَنَّكُمْ مُخْرَجُونَ

क्या ये शख्स तुमसे वायदा करता है कि जब तुम मर जाओगे और (मर कर) सिर्फ मिट्टी और हड्डियाँ (बनकर) रह जाओगे तो तुम दुबारा ज़िन्दा करके कब्रों से निकाले जाओगे (है है अरे) जिसका तुमसे वायदा किया जाता है

36

ۚ هِيَ هَيَاتَ هَيَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ

बिल्कुल (अक्ल से) दूर और क़यास से बईद है (दो बार ज़िन्दा होना कैसा) बस यही तुम्हारी दुनिया की ज़िन्दगी है

37

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ

कि हम मरते भी हैं और जीते भी हैं और हम तो फिर (दुबारा) उठाए नहीं जाएँगे हो न हो ये (सालेह) वह शख्स है जिसने खुदा पर झूठ मूठ बोहतान बाँधा है

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ وَمَا نَحْنُ لَهُۥ بِمُؤْمِنِينَ

और हम तो कभी उस पर ईमान लाने वाले नहीं (ये हालत देखकर) सालेह ने दुआ की ऐ मेरे पालने वाले चूँकि इन लोगों ने मुझे झुठला दिया

قَالَ رَبِّ اُنْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونَ

तू मेरी मदद कर खुदा ने फरमाया (एक ज़रा ठहर जाओ)

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ ۖ لَّيُصْبِحُنَّ نَدِيمِينَ

अनक़रीब ही ये लोग नादिम व परेशान हो जाएँगे

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمُ غُرَاءً ۚ ۖ فَبُعْدًا ۖ لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

गरज़ उन्हें यक़ीनन एक सख्त चिंघाड़ ने ले डाला तो हमने उन्हें कूड़े करकट (का ढेर) बना छोड़ा पस ज़ालिमों पर (खुदा की) लानत है

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا ءَاخِرِينَ

फिर हमने उनके बाद दूसरी क़ौमों को पैदा किया

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَخِرُونَ

कोई उम्मत अपने वक्त मुक़रर से न आगे बढ़ सकती है न (उससे) पीछे हट सकती है

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا ۖ كُلٌّ مَّا جَاءَ أُمَّةً ۖ رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ ۖ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ
بَعْضًا ۖ وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۖ فَبُعْدًا ۖ لِلْقَوْمِ ۖ لَا يُؤْمِنُونَ

फिर हमने लगातार बहुत से पैग़म्बर भेजे (मगर) जब जब किसी उम्मत का पैग़म्बर उन के पास आता तो ये लोग उसको झुठलाते थे तो हम थी (आगे पीछे) एक को दूसरे के बाद (हलाक) करते गए और हमने उन्हें (नेस्त व नाबूद करके) अफसाना बना दिया तो ईमान न लाने वालों पर खुदा की लानत है

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍۭ ۖ مُّبِينٍۭ

फिर हमने मूसा और उनके भाई हारुन को अपनी निशानियों और वाज़ेए व रौशन दलील के साथ फिरऔन और उसके दरबार के उमराओ के पास रसूल बना कर भेजा

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَٲِيهِۚ فَاسْتَكْبَرُوا۟ ۖ وَكَانُوا۟ قَوْمًا عَالِينَ

तो उन लोगो ने शेखी की और वह थे ही बड़े सरकश लोग

فَقَالُوا۟ ۖ أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عِبَدُونَ

आपस मे कहने लगे क्या हम अपने ही ऐसे दो आदमियों पर ईमान ले आएँ हालाँकि इन दोनों की (क्रौम की) क्रौम हमारी खिदमत गारी करती है

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا۟ مِنَ الْمُهْلَكِينَ

गरज़ उन लोगों ने इन दोनों को झुठलाया तो आखिर ये सब के सब हलाक कर डाले गए

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ

और हमने मूसा को किताब (तौरैत) इसलिए अता की थी कि ये लोग हिदायत पाएँ

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ ۖ ءَايَةً ۖ وَأَوَيْنَهُمَا إِلَىٰ رِبْوَةٍ ۖ ذٰتِ قَرَارٍ ۖ وَمَعِينٍۭ

और हमने मरियम के बेटे (ईसा) और उनकी माँ को (अपनी कुदरत की निशानी बनाया था) और उन दोनों को हमने एक ऊँची हमवार ठहरने के क़ाबिल चश्में वाली ज़मीन पर (रहने की) जगह दी

يٰٓأَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوْا۟ مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاَعْمَلُوا۟ صٰلِحًا ۖ اِنِّیۡ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌۭ

और मेरा आम हुक्म था कि ऐ (मेरे पैग़म्बर) पाक व पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छे अच्छे काम करो (क्योंकि) तुम जो कुछ करते हो मैं उससे बखूबी वाक़िफ हूँ

52

وَإِنَّ هَذِهِ ۖ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً ۖ وَحِدَةً ۖ وَأَنَا ۖ رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ

(लोगों ये दीन इस्लाम) तुम सबका मज़हब एक ही मज़हब है और मैं तुम लोगों का परवरदिगार हूँ

53

فَتَقَطَّعُوا ۖ أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ ۖ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ

तो बस मुझी से डरते रहो फिर लोगों ने अपने काम (में एखतिलाफ करके उस) को टुकड़े टुकड़े कर डाला हर गिरो जो कुछ उसके पास है उसी में निहाल निहाल है

54

فَذَرَهُمْ فِي غَمَرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ

तो (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उन की गफलत में एक खास वक्त तक (पड़ा) छोड़ दो

55

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهِ ۖ مِنْ مَّالٍ ۖ وَبَنِينَ

क्या ये लोग ये ख्याल करते हैं कि हम जो उन्हें माल और औलाद में तरक्की दे रहे हैं तो हम उनके साथ भलाईयाँ करने में जल्दी कर रहे हैं

56

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۖ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ

(ऐसा नहीं) बल्कि ये लोग समझते नहीं

57

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ

उसमें शक नहीं कि जो लोग अपने परवरदिगार की वहशत से लरज़ रहे हैं

58

وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ

और जो लोग अपने परवरदिगार की (कुदरत की) निशानियों पर ईमान रखते हैं

59

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ

और अपने परवरदिगार का किसी को शरीक नहीं बनाते

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا؟ وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ

और जो लोग (खुदा की राह में) जो कुछ बन पड़ता है देते हैं और फिर उनके दिल को इस बात का खटका लगा हुआ है कि उन्हें अपने परवरदिगार के सामने लौट कर जाना है

أَوَلَيْكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ

(देखिये क्या होता है) यही लोग अलबत्ता नेकियों में जल्दी करते हैं और भलाई की तरफ (दूसरों से) लपक के आगे बढ़ जाते हैं

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا؟ وَلَدَيْنَا كِتَابٌ؟ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ؟ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

और हम तो किसी शख्स को उसकी क़वत से बढ़के तकलीफ़ देते ही नहीं और हमारे पास तो (लोगों के आमाल की) किताब है जो बिल्कुल ठीक (हाल बताती है) और उन लोगों की (ज़र्रा बराबर) हक़ तलफ़ी नहीं की जाएगी

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ؟ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَلٌ؟ مِّنْ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَمَلُونَ

उनके दिल उसकी तरफ से ग़फलत में पड़े हैं इसके अलावा उन के बहुत से आमाल हैं जिन्हें ये (बराबर किया करते हैं) और बाज़ नहीं आते

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْرُونَ

यहाँ तक कि जब हम उनके मालदारों को अज़ाब में गिरफ्तार करेंगे तो ये लोग वावैला करने लगेंगे

لَا تَجْرُوا؟ الْيَوْمَ؟ إِنَّكُمْ مِنَّا لَا تُنصَرُونَ

(उस वक़्त कहा जाएगा) आज वावैला मत करो तुमको अब हमारी तरफ से मदद नहीं मिल सकती

قَدْ كَانَتْ ءَايَتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰٰ أَعْقَابِكُمْ تَنكِصُونَ

(जब) हमारी आयतें तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थीं तो तुम अकड़ते किस्सा कहते बकते हुए उन से उलटे पाँव फिर जाते

67

مُسْتَكْبِرِينَ بِهِ ۚ سَمِرًا ۚ تَهْجُرُونَ

तो क्या उन लोगों ने (हमारी) बात (कुरान) पर गौर नहीं किया

68

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا ۚ الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ

उनके पास कोई ऐसी नयी चीज़ आयी जो उनके अगले बाप दादाओं के पास नहीं आयी थी

69

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا ۚ رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ ۚ مُنْكَرُونَ

या उन लोगों ने अपने रसूल ही को नहीं पहचाना तो इस वजह से इन्कार कर बैठे

70

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ ۚ جِنَّةٌ ۚ ۚ بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُم لِلْحَقِّ كُرْهُونَ

या कहते हैं कि इसको जुनून हो गया है (हरगिज़ उसे जुनून नहीं) बल्कि वह तो उनके पास हक़ बात लेकर आया है और उनमें के अक्सर हक़ बात से नफरत रखते हैं

71

وَلَوْ أَتَبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ ۚ بَلْ أَتَيْنَهُمْ
بَذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ

और अगर कहीं हक़ उनकी नफसियानी ख्वाहिश की पैरवी करता है तो सारे आसमान व ज़मीन और जो लोग उनमें हैं (सबके सब) बरबाद हो जाते बल्कि हम तो उन्हीं के तज़किरे (जिबरील के वास्ते से) उनके पास लेकर आए तो यह लोग अपने ही तज़किरे से मुँह मोड़ते हैं

72

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا ۚ ۚ فَخَرَّاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۚ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزَاقِينَ

(ऐ रसूल) क्या तुम उनसे (अपनी रिसालत की) कुछ उजरत माँगते हो तो तुम्हारे परवरदिगार की उजरत उससे कही बेहतर है और वह तो सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है

73

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ ۚ مُسْتَقِيمٍ ۚ

और तुम तो यकीनन उनको सीधी राह की तरफ बुलाते हो

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكْبُونَ

और इसमें शक नहीं कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते वह सीधी राह से हटे हुए हैं

﴿۱﴾ وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ ﴿۲﴾ لَلْجُودِ ﴿۳﴾ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ

और अगर हम उन पर तरस खाये और जो तकलीफें उनको (कुफ्र की वजह से) पहुँच रही हैं उन को दफा कर दें तो यकीनन ये लोग (और भी) अपनी सरकशी पर अड़ जाए और भटकते फिरें

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا ﴿۱﴾ لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ

और हमने उनको अज़ाब में गिरफ्तार किया तो भी वे लोग न तो अपने परवरदिगार के सामने झुके और गिड़गिड़ाएँ

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ﴿۱﴾ ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ

यहाँ तक कि जब हमने उनके सामने एक सख्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया तो उस वक्त फ़ौरन ये लोग बेआस होकर बैठ रहे

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَرَ وَالْأَفْئِدَةَ ﴿۱﴾ قَلِيلًا ﴿۲﴾ مَا تَشْكُرُونَ

हालाँकि वही वह (मेहरबान खुदा) है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किये (मगर) तुम लोग हो ही बहुत कम शुक्र करने वाले

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

और वह वही (खुदा) है जिसने तुम को रुए ज़मीन में (हर तरफ) फैला दिया और फिर (एक दिन) सब के सब उसी के सामने इकट्ठे किये जाओगे

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي ﴿۱﴾ وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ﴿۲﴾ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

और वही वह (खुदा) है जो जिलाता और मारता है कि और रात दिन का फेर बदल भी उसी के एख्तियार में है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते

بَلْ قَالُوا ۖ مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ

(इन बातों को समझें खाक नहीं) बल्कि जो अगले लोग कहते आए वैसी ही बात ये भी कहने लगे

قَالُوا ۖ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ وَعِظْمًا ۖ إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ

कि जब हम मर जाएँगे और (मरकर) मिट्टी (का ढेर) और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम फिर दोबारा (क़ब्रों से ज़िन्दा करके) निकाले जाएँगे

لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَءَابَاؤُنَا هَذَا مِنْ قَبْلُ إِن هَذَا إِلَّا أَسْطِيرُ الْأَوَّلِينَ

इसका वायदा तो हमसे और हमसे पहले हमारे बाप दादाओं से भी (बार हा) किया जा चुका है ये तो बस सिर्फ अगले लोगों के ढकोसले हैं

قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि भला अगर तुम लोग कुछ जानते हो (तो बताओ) ये ज़मीन और जो लोग इसमें हैं किस के हैं वह फौरन जवाब देंगे खुदा के

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۖ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

तुम कह दो कि तो क्या तुम अब भी ग़ौर न करोगे

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि सातों आसमानों का मालिक और (इतने) बड़े अर्श का मालिक कौन है तो फौरन जवाब देंगे कि (सब कुछ) खुदा ही का है

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۖ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ

अब तुम कहो तो क्या तुम अब भी (उससे) नहीं डरोगे

قُلْ مَنْ ۚ بِيدِهِ ۚ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो कि भला अगर तुम कुछ जानते हो (तो बताओ) कि वह कौन शख्स है- जिसके एख्तेयार में हर चीज़ की बादशाहत है वह (जिसे चाहता है) पनाह देता है और उस (के अज़ाब) से पनाह नहीं दी जा सकती

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ

तो ये लोग फौरन बोल उठेंगे कि (सब एख्तेयार) खुदा ही को है- अब तुम कह दो कि तुम पर जादू कहाँ किया जाता है

بَلْ أَتَيْنُهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

बात ये है कि हमने उनके पास हक़ बात पहुँचा दी और ये लोग यक़ीनन झूठे हैं

مَا أَتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ ۚ وَمَا كَانَ مَعَهُ ۚ مِنْ إِلَهِ ۚ إِذْ ۚ لَذَهَبَ كُلُّ إِلَهِ ۚ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَنَ اللَّهُ عَمَّا يُصِفُونَ

न तो अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उसके साथ कोई और खुदा है (अगर ऐसा होता) उस वक्त हर खुदा अपने अपने मख़लूक को लिए लिए फिरता और यक़ीनन एक दूसरे पर चढ़ाई करता

عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ

(और खूब जंग होती) जो जो बातें ये लोग (खुदा की निस्बत) बयान करते हैं उस से खुदा पाक व पाकीज़ा है वह पोशीदा और हाज़िर (सबसे) खुदा वाक़िफ़ है गरज़ वह उनके शिर्क से (बिल्कुल पाक और) बालातर है

قُلْ رَبِّ إِمَّا تُرِيْنِي مَا يُوعَدُونَ

(ऐ रसूल) तुम दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले जिस (अज़ाब) का तूने उनसे वायदा किया है अगर शायद तू मुझे दिखाए

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

तो परवरदिगार मुझे उन ज़ालिम लोगों के हमराह न करना

وَأِنَّا عَلَىٰ أَنْ تُرِيكَ مَا نَعِدُّهُمْ لَقَدِيرُونَ

और (ऐ रसूल) हम यकीनन इस पर क़ादिर हैं कि जिस (अज़ाब) का हम उनसे वायदा करते हैं तुम्हें दिखा दें

أَدْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةِ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ

और बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहो जो निहायत अच्छी हो जो कुछ ये लोग (तुम्हारी निस्बत) बयान करते हैं उससे हम खूब वाकिफ हैं

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ

और (ये भी) दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले मैं शैतान के वसवसों से तेरी पनाह माँगता हूँ

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونَ

और ऐ मेरे परवरदिगार इससे भी तेरी पनाह माँगता हूँ कि शयातीन मेरे पास आएँ

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ

(और कुफ़ार तो मानेंगे नहीं) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मौत आयी तो कहने लगे परवरदिगार तू मुझे (एक बार) उस मुक़ाम (दुनिया) में छोड़ आया हूँ फिर वापस कर दे ताकि मैं (अपकी दफ़ा) अच्छे अच्छे काम करूँ

لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا ۚ فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۚ وَمِنْ وَرَائِهِمْ
بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمٍ يُبْعَثُونَ

(जवाब दिया जाएगा) हरगिज़ नहीं ये एक लड़ो बात है- जिसे वह बक रहा और उनके (मरने के) बाद (आलमे) बरज़ख है

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ ۚ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ

(जहाँ) क़ब्रों से उठाए जाएँगे (रहना होगा) फिर जिस वक्त सूर फूँका जाएगा तो उस दिन न लोगों में क़राबत दारियाँ रहेगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे

102

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۖ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

फिर जिन (के नेकियों) के पल्लें भारी होंगे तो यही लोग कामयाब होंगे

103

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۖ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ

और जिन (के नेकियों) के पल्लें हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपना नुकसान किया कि हमेशा जहन्नूम में रहेंगे

104

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ

और (उनकी ये हालत होगी कि) जहन्नूम की आग उनके मुँह को झुलसा देगी और लोग मुँह बनाए हुए होंगे

105

أَلَمْ تَكُنْ ءَايَتِي تَتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ

(उस वक्त हम पूछेंगे) क्या तुम्हारे सामने मेरी आयतें न पढ़ी गयीं थीं (ज़रूर पढ़ी गयी थीं) तो तुम उन्हें झुठलाया करते थे

106

قَالُوا ۖ رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ

वह जवाब देंगे ऐ हमारे परवरदिगार हमको हमारी कम्बख्ती ने आज़माया और हम गुमराह लोग थे

107

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ

परवरदिगार हमको (अबकी दफा) किसी तरह इस जहन्नूम से निकाल दे फिर अगर दोबारा हम ऐसा करें तो अलबत्ता हम कुसूरवार हैं

108

قَالَ أَحْسُوا ۖ فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونَ

खुदा फरमाएगा दूर हो इसी में (तुम को रहना होगा) और (बस) मुझ से बात न करो

إِنَّهُ ۚ كَانَ فَرِيقٌ ۚ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا ءَامَنَّا فَأَغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّحِمِينَ

मेरे बन्दों में से एक गिरोह ऐसा भी था जो (बराबर) ये दुआ करता था कि ऐ हमारे पालने वाले हम ईमान लाए तो तू हमको बख्श दे और हम पर रहम कर तू तो तमाम रहम करने वालों से बेहतर है

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُم ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ

तो तुम लोगों ने उन्हें मसखरा बना लिया-यहाँ तक कि (गोया) उन लोगों ने तुम से मेरी याद भुला दी और तुम उन पर (बराबर) हँसते रहे

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۚ أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ

मैंने आज उनको उनके सब्र का अच्छा बदला दिया कि यही लोग अपनी (खातिरखाह) मुराद को पहुँचने वाले हैं

قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ

(फिर उनसे) खुदा पूछेगा कि (आखिर) तुम ज़मीन पर कितने बरस रहे

قَالُوا ۚ لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ فَسَلِ الْعَادِثِينَ

वह कहेंगे (बरस कैसा) हम तो बस पूरा एक दिन रहे या एक दिन से भी कम

قُلْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۚ لَّوْ أَنْكُم كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

तो तुम शुमार करने वालों से पूछ लो खुदा फरमाएगा बेशक तुम (ज़मीन में) बहुत ही कम ठहरे काश तुम (इतनी बात भी दुनिया में) समझे होते

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا ۚ وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ

तो क्या तुम ये ख्याल करते हो कि हमने तुमको (यूँ ही) बेकार पैदा किया और ये कि तुम हमारे हुज़ूर में लौटा कर न लाए जाओगे

فَتَعَلَىٰ اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

तो खुदा जो सच्चा बादशाह (हर चीज़ से) बरतर व आला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वहीं) अर्श बुर्जुग का मालिक है

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ ۚ بِهِ ۚ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ ۚ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ

और जो शख्स खुदा के साथ दूसरे माबूद की भी परसतिश करेगा उसके पास इस शिर्क की कोई दलील तो है नहीं तो बस उसका हिसाब (किताब) उसके परवरदिगार ही के पास होगा (मगर याद रहे कि कुफ़ार हरगिज़ फलॉह पाने वाले नहीं)

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِمِينَ

और (ऐ रसूल) तुम कह दो परवरदिगार तू (मेरी उम्मत को) बख्श दे और तरस खा और तू तो सब रहम करने वालों से बेहतर है